अमृतलाल नागर

नाम = सुषमा

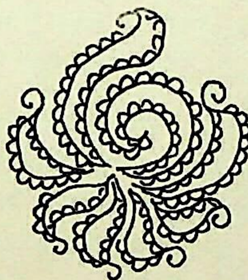
सभ्यता के निर्माता

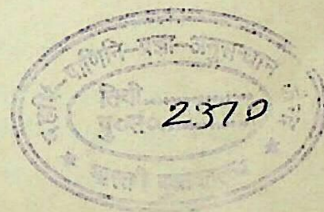
9·5



सभ्यता के निर्माता

अमृतलाल नागर





चमेवती आर्या



राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली

मूल्य : दस रुपये (10.00)

संस्करण : 1987 © प्रकाशक

राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली द्वारा प्रकाशित

SABHYATA KE NIRMATA, by Amrit Lal Nagar

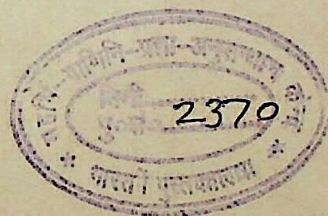
दो शब्द

अपने एक ऐतिहासिक उपन्यास के निमित्त से पिछले दो-तीन वर्षों से मुझे भारत और विश्व की पौराणिक कहानियां अध्ययन करने का मौका मिला। प्राग् ऐतिहासिक काल की जानकारी पाने के लिए मुझे पुरातत्वविदों की शोध सामग्री भी पढ़नी पड़ी। इस अध्ययन क्रम में मुझे यह देखकर बड़ा ही सुखद आश्चर्य हुआ कि हमारी अनेक पौराणिक कहानियों में मध्य एशिया तक का पुराना इतिहास समाया हुआ है। इस जानकारी के साथ ही साथ मुझे विश्व की अनेक महाविभूतियों के जीवन चरित्रों ने भी बहुत प्रभावित किया। मुझे लगा कि लोकतंत्र के युग में हमारे कुमारों की चेतना का व्यापक रूप से विकास करने के लिए इस सामग्री को सरल शैली में प्रस्तुत करना चाहिए। प्रस्तुत पुस्तक मेरी इसी इच्छा का सुफल है। अपनी पौराणिक कहानियों में हमारे नये पाठकों को इतिहास की झलक मिलने से उनकी चेतना वैज्ञानिक चिन्तन के धरातल पर पहुंच सकेगी।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखन में मुझे डोनाल्ड मैकेंजी के 'मिथ्स एण्ड लिजेण्ड्ज' नामक महाग्रंथ के अनेक भागों तथा डाक्टर एल० ए० वैडुल की सुप्रसिद्ध पुस्तक 'मेकर्स आफ सिविलाइजेशन इन रेस एण्ड हिस्ट्री' पुस्तकों से बड़ी सहायता मिली है। इनके अतिरिक्त जैन महापुराण, टामस ह्यूज की लिखी ईसा और मूसा की जीवनियों तथा हाफ़िज़ ग़ुलामसरवर लिखित मोहम्मद साहब की जीवनी से भी सहायता ली गई है। लेखक इन सबका आभारी है।

अमृतलाल नागर

चौक, लखनऊ-226003
25 नवम्बर, 1970 ई०



विषय-सूची



1

भारतीय समाज के निर्माता ऋषभदेव

मेरे हाथ में एक जादू का दर्पण है जिसे इतिहासकारों और पुरातत्वविदों की लगन और वैज्ञानिक चिंतन प्रणाली ने बड़ी मेहनत से बनाया है। इस दर्पण में देखने से बहुत-सी पौराणिक या परी कथाएं, जिन्हें हम अब तक कोरी मनगढ़न्त गप्पें या धार्मिक अंध विश्वास की खान मानते रहे हैं, बहुधा हमें इतिहास की खोयी हुई कड़ियां जोड़ने वाली अनमोल सामग्री के रूप में दिखलाई देने लगती हैं। पुराने कबाड़खाने में छिपे हुए नये रतन चमक उठते हैं।

आइए, नई दुनिया को बनाने के उद्देश्य से इस जादुई दर्पण को अपने हाथ में लेकर हम और आप पुरानी दुनिया की सैर करें।

दर्पण में दृश्य झलकता है—एक नदी के किनारे-किनारे काठ की चहार-दीवारी के मज़बूत घेरे में एक बड़ी भारी बस्ती बसी हुई है।

जादू के दर्पण में उस बस्ती का नाम सुनाई पड़ता है—'अयोध्या'। हमें अचरज होता है कि यह कैसी अयोध्या है। वाल्मीकीय रामायण में तो अयोध्या बड़ी शानदार बखानी गई है।

हां, यह सही है, लेकिन यह अयोध्या भगवान रामचन्द्र जी के जन्म से लगभग चार-पांच हज़ार वर्ष पहले की है। यह सभ्यता का उषाकाल है। अभी तो इंसान के पास पत्थर के औज़ार और हथियार ही हैं। हां, उस समय के मनुष्य ने इतनी तरक्की अवश्य कर ली है कि पत्थर के नुकीले तीर बनाकर और उन्हें

धनुष पर चढ़ाकर छोड़ने लगा है। इस तरह उसने आधुनिक राकेट के बाबा आदम (बाण) को ईजाद कर लिया है। धातुओं का थोड़ा बहुत परिचय भी उस समय के मनुष्य को हो चला है। तांबे आदि धातुओं की खोज में वह दूर-दूर तक जाने भी लगा है, मगर अभी वह सही ढंग से धातु युग ला नहीं पाया।

इस ज़माने में अयोध्या नगरी के राजा नाभिराज थे। यह दुनिया के पहले प्रजापति स्वायंभुव मनु के पड़पोते थे। मनु के माने हैं नेता, यानी स्वायंभुव मनुष्यों के पहले नेता हुए। उन्होंने दुनिया की वस्तुओं को नाम दिए। द्वीपों, समुद्रों और नदियों के नाम सबसे पहले उन्होंने ही रखे थे। राजा नाभि के पुरखे देवकुरु, उत्तर कुरु यानी आजकल के उत्तरी ध्रुव से लेकर कश्यप सागर तक के इलाके में रहने वाले लोग थे। उनके कबीले का नाम मरुतगण था। सचमुच यह हवाओं के ही देश का कबीला था। ये लोग चाल-ढाल, बुद्धि सभी में हवा की तरह तेज थे। इन्होंने सभ्यता को पहली बार सही ढंग से आगे बढ़ाया। इसी मरुत कबीले के स्वायंभुव मनु कश्मीर में पीर पंजाल के रास्ते से हिन्दुस्तान में लगभग आठ-नौ हज़ार वर्ष पहले आए थे। लेकिन जिस समय का दृश्य हम देख रहे हैं उस समय तक राजा नाभि ने अपना राज-पाट मगध तक बढ़ा लिया था और यह अयोध्या नगरी उन्होंने ही बसाई थी।

आज उन्हीं के घर में बेटा हुआ है। सारे कबीले के लोग आनन्द मना रहे हैं। उस समय तक मनुष्य खेती करना आमतौर से नहीं जानता था, हां, कुछ लोग उस दिशा में कुछ जतन अवश्य करने लगे थे। जंगलों में जो अन्न व फल-फूल अपने-आप उग आते थे उन्हें ही आमतौर से बीन-बटोर कर लोग खाया करते थे या फिर पशुओं का शिकार करके मांस खाते थे। बेटा हुआ तो राजा के घर बहुत बड़ी ज्योनार हुई। सबने मिलकर यही सब खाया-पिया और सुख मनाया। राजकुमार चूंकि डील-डौल में औसत बच्चों से कुछ बड़ा और तगड़ा था, इसलिए उसका नाम वृषभ रखा गया। उसे ऋषभ के नाम से भी पुकारा जाता था।

धीरे-धीरे राजकुमार ऋषभ बड़े होने लगे। अपने आसपास के बच्चों में उनकी बुद्धि बहुत ही तेज थी। उन्होंने राज-काज को समझने, हथियारों को चलाने तथा अपने ज़माने के प्रचलित ज्ञान की शिक्षा पाने में अपनी बुद्धि के पैनेपन और कुशलता का कमाल तो दिखलाया ही, साथ ही वह ऐसे नये-नये काम करने की सोचते थे जिससे कि लोगों को अपनी उन्नति की नई राहें मिलें। जन-मन में उनके प्रति बड़ा आदर था। जैन पुराणों में लिखा है कि उन्होंने असि, मसि, कृषि, विद्या, वाणिज्य और शिल्प यह छह रास्ते बनाए। उन्होंने अपनी प्रजा के ऐसे चतुर लोगों को भी पहचाना जो हर अन्न और फल के बीज जमा करने और उचित मौसम में उन्हें उगाने की विद्या को कुछ-कुछ जान गए थे। ऐसे गुणी जनों को उन्होंने ज़मीनें दीं और अपनी निगरानी में खेती के नये-नये प्रयोग कराने लगे। नतीजा यह हुआ कि लोग खेती करने के हुनर को जानने का अधिकाधिक प्रयत्न करने लगे।

उन्होंने अपने राज्य भर के अच्छे-अच्छे निशानेबाज, कुशल हथियार बनाने वाले इकट्ठा किए। सेना का नये ढंग से संगठन किया और लड़वइयों का एक अलग वर्ग कायम किया। समाज तरह-तरह से मेहनती और सुखी हो, ऋषभ बराबर यही सोचा करते थे। राजा नाभि के देहान्त के बाद जब उन्हें राजगद्दी मिली तब बड़ी ही पटुता से उन्होंने अपना राज-काज चलाया और ऐसे बहुत से राज्य जीते जहां के राजा अपने कुछ मुंहलगे लोगों के साथ प्रजा को लूटते और कष्ट देते थे। दुनिया की सबसे पुरानी किताब ऋग्वेद के पहले मंडल के एक सूक्त में उन्हें प्रजाओं को धन आदि से प्रसन्नता प्रदान करने वाला राजा बखाना गया है।

ऋषभदेव ने कविता करने के भी कुछ नियम बनाए और यह भी कहा जाता है कि अपनी ब्राह्मी नाम की बेटी को लिखना-पढ़ना सिखाने के लिए उन्होंने ब्राह्मी लिपि का आविष्कार किया। नृत्य कला को भी ऋषभदेव ने बड़ा आदर-मान दे रखा था। नीलांजना नाम की एक सुन्दरी का नृत्य उन्हें बहुत पसन्द

आता था। वे मुग्ध होकर उसका नाच देखते थे और उसकी कला का बड़ा आदर करते थे। एक दिन दरबार में वे नीलांजना का नृत्य देख रहे थे। उस दिन वह कमाल का नृत्य दिखला रही थी। नाच जब पूरी तेजी पर आया तो वह बिजली बन गई। देखने वाले बस देखते ही रह गए।

अरे, यह क्या हुआ। वह काया जिससे अभी बिजलियां कौंध रही थीं, जिसने अपनी कला से सबको मंत्रमुग्ध कर रखा था, धरती पर अचानक ऐसे गिरी जैसे तूफान से वृक्ष उखड़कर गिरता है। राजा ऋषभदेव और उनके दरबारी दौड़कर उसके पास पहुंचे। देखा तो काया निर्जीव पड़ी थी।

ऋषभदेव यह दृश्य देखते ही गम्भीर ध्यान में डूब गए। 'यह जीव क्षण-भर में नष्ट हो जाता है। कभी बच्चा, कभी जवान, कभी बूढ़ा होता रहता है। इसके पीछे भेद कौन-सा है, यह नहीं समझ में आता। मनुष्यों का यह शरीर एक गाड़ी की तरह से है जो दुःखरूपी मिट्टी के बर्तनों से लदी है। इस भार को ढोकर ले जाना बड़ा कठिन है। तब इसको हल्का करने का उपाय क्या है, जीवन का असली सुख क्या है।' यह सब बातें एकदम से उनके दिल और दिमाग में भर गईं। ऋषभदेव ने उसी समय अपने बेटे भरत को राजपाट सौंपा और तपस्या में मन लगाया।

ऋषभदेव अपने ही समय में इतने विख्यात हो गए थे कि लोग उन्हें साक्षात् भगवान मानते थे। उनका सारा जीवन दूसरों के लिए था; और जब वह अपना हुआ तो वह अपनापन भी ऐसा विराट् था कि उसमें सारा जग समा गया। प्रेम और व्यवस्था का ऐसा सुपंथ चलाने के नाते ही भगवान ऋषभदेव आज तक पूजे जाते हैं।

उन्हीं के चक्रवर्ती पुत्र भरत हुए जिन्होंने राजा और योगी दोनों ही रूपों में अपना अनोखा चमत्कार दिखलाया। उनके राजकाल से ही यह देश भारतवर्ष कहलाने लगा और उनके योग की सिद्धि भी ऐसी महान् थी कि हमारे पुराण उन्हें 'जड़भरत' नाम से पुकार करके भी उनकी स्मृति में बड़ी श्रद्धा से सिर झुकाते हैं।

2

सर्गोन महान् के गुरु भार्गव और्व

यह जादू का शीशा बड़ा नटखट है। हम इसमें जो देखना चाहते हैं वह हमें दिखलाता तो अवश्य है, मगर कभी-कभी यह ऐसा चंचल हो उठता है कि जिसे देखने की हमने इच्छा तक न की थी, वह तमाशा भी अपने आप ही दिखलाने लगता है।

मैंने सोचा कि भारतीय पुरखे ऋषभदेव के बाद मैं पहले विश्व सम्राट सर्गोन या सरगन महान् के दर्शन करूं। मगर दर्पण अपने जादुई दीदे मटकाकर बोला—'नहीं, मैं तो राजा सगर की झलक दिखलाऊंगा।'

मैं बोला—'नहीं भाई, मैं सर्गोन की कहानी जानना चाहता हूं।'

जादू का शीशा दीदे मटकाकर बोला—'अजी महाशय, क्या आप अपने राजा सगर और ईराक के सर्गोन को दो अलग-अलग व्यक्ति मानते हैं ?'

तो क्या हमारे राजा सगर ही मिस्र, ईराक, फारस, भूमध्य सागर के इलाके यहां तक कि धुर ब्रिटेन (यानी भरतन) तक को जीतने वाले पहले विश्वविजेता सम्राट थे ? हमारे विष्णु पुराण में सगर को विश्वविजेता तो ज़रूर बखाना गया है, मगर उसके बाद की कहानी बतलाने के लिए जादुई दर्पण हमें ईराक देश की हुफरात नदी के किनारे दुनिया के सबसे पुराने सूर्य मंदिर के खंडहर दिखलाने लगता है, जो आज से लगभग 40 बरस पहले 'निप्पुर' के टीले की खुदाई में निकले थे। उस सूर्य मंदिर में ईंटों पर पुराने कीलाक्षरों में लिखी हुई वंशावलियां

मिली थीं । सर्गोन महान् का सारा इतिहास इन ईंटों पर खुदा हुआ है । सबसे आश्चर्य की बात यह है कि वे वंशावलियां हमारे पुराणों में दी गई वंशावलियों से हू-ब-हू मिलती हैं।

खैर, हमने सोचा कि जादू का शीशा बड़ा उपकारी है । हमारी चेतना की छोटी सी परिधि को वह अब बड़ा फैलाव दे रहा है । हमनें उससे प्रार्थना की—'सुनाओ भाई, सुनाओ ।'

लेकिन नटखट शीशा बोला—'न, मैं तुम्हें पहले उनके गुरू की कहानी सुनाऊंगा । जब तक तुम उनके गुरु की विशेषताएं नहीं जान लोगे तब तक तुम राजा सगर की कहानी पर विश्वास नहीं करोगे ।'

जादू के दर्पण का दृश्य बदल गया । कहानी वहां से शुरु हुई जहां से महर्षि और्व के पितृकुल अर्थात् भार्गव कुल पर एक बहुत बड़ा संकट आया था । एक राजा कृतवीर्य भृगुवंशी महर्षियों के यजमान थे । उन्होंने एक बड़ा भारी यज्ञ करवाया । अपने उग्र स्वभाव के पुरोहित भार्गवों को बहुत सारा धन देकर संतुष्ट किया । इस बात के कई वर्षों बाद जब राजा कृतवीर्य मर गए तो उनके वंशवालों पर एक बार मुसीबत पड़ी । उस समय उनके पास धन की बेहद तंगीं थी । राजा कृतवीर्य के वंशज ने सोचा कि भार्गव बड़े मालदार हैं, हमारे पुरोहित हैं, उनसे मांगने पर धन मिल जाएगा । लेकिन भार्गवों ने इन्कार कर दिया । राजा को क्रोध आया कि मैं तो अपने पुरोहितों के द्वार पर भिखारी बनकर आया और उन्होंनें हमारी इस तरह सें उपेक्षा कर दो । उस क्षत्रिय ने फिर अपना राजा वाला रूप दिखलाया । उसने अपने सिपाहियों से कहा कि भार्गवों के घर लूट लो । आज्ञा होते ही भार्गवों की बस्ती पर धन-लोलुपों का आक्रमण हो गया । अपने पैने बाणों से क्षत्रिय लोग सभी भृगुवंशियों को यमराज के यहा भेजने लगे, यहां तक कि वे ढूंढ़कर गर्भ के बालकों की भी हत्या करने लगे । बेचारे भृगुवंशी परिवार तितर-बितर होकर जहां जिसको शरण मिली वहां जाकर छिप गए । बहुत से भृगुवंशी ब्राह्मणों की स्त्रियां डर के मारे हिमालय पर्वत की

कई बीहड़ गुफाओं में जा छिपीं।

किस्सा चल रहा था कि नटखट दर्पण अचानक पूछ बैठा—'चमत्कार सुनोगे कि असली बात ?'

हमने कहा—'चमत्कार क्या है ?'

'जैसे पुराणों में लिखा है कि जब क्षत्रियों ने वहां भी हमला किया तो एक गर्भवती भार्गवी का बच्चा अपनी और मां की जान बचाने के लिए उसके गर्भाशय से उसकी जांघ यानी उरू के भीतर उतर आया।'

'और सच क्या है ?' मैंने पूछा।

'सीधी बात है कि महर्षि और्व ने उरू देश यानी वर्तमान ईराक के किसी छिपे हुए स्थान में जन्म पाया था।' खैर, तो यह और्व ऋषि धीरे-धीरे बड़े होने लगे। बचपन से ही यह बड़े प्रतिभाशाली और गम्भीर थे। अपना होश सम्हालने पर इन्होंने अपनी माता से जब अपने पिता के सम्बन्ध में पूछा तो राजा कृतवीर्य के वंशजों के द्वारा किए गए निर्मम हत्याकाण्ड और उसमें अपने पिता के भी मारे जाने की कहानी सुनी। अभी बच्चे का होश पूरी तौर से सम्हला भी न था कि उसका जोश एकदम से जवान हो उठा। उसने प्रतिज्ञा कर ली कि मैं इन दुष्ट क्षत्रियों का संहार करके ही रहूंगा।

जादू के शीशे ने फिर पूछा—'जानते हो, हुफरात के पास वाले सूर्य मंदिरो की ईंटों में तुम्हारे इस और्व का नाम क्या लिखा है ?'

'नहीं।' मैंने उत्तर दिया।

'अनक्की और और्व को 'उरूर' लिखा है, अर्थात् उरू का रहने वाला।'

'अच्छा कहानी सुनाओ।'

'हां, तो उस और्व उर्फ उरूर अनक्की की तपस्विनी मां उसे किसी यज्ञकर्ता महर्षि के आश्रम में ले गई। वहां उसके पढ़ाने-लिखाने का प्रबन्ध किया।

और्व उर्फ अनक्की बड़े ही लगन वाले और कुशाग्र बुद्धि के थे। उनके गुरुजन स्वाभाविक रूप से उनसे बहुत प्रसन्न रहा करते थे। और्व उर्फ अनक्की ने उस

समय तक वेद की जितनी ऋचायें थीं, उनका विधिवत् पाठ करना ही नहीं सीखा, बल्कि उनके ऊपर विचार करना और विचारों को आगे बढ़ाना भी सीखा। उनके समय तक मनुष्य इतना होशियार हो गया था कि पत्थर की जगह तांबे के अस्त्र-शस्त्र बनाकर उनसे लड़ता था। मूर्तियों की ढलाई तक तांबे-पीतल आदि में होने लगी थी। महल अब सचमुच महल लगते थे। सोने, चांदी, हीरे-जवाहरात की चमक-दमक चारों ओर दिखलाई देती थी।

और्व ऋषि ने धातुओं की ढलाई और अस्त्र-शस्त्र बनाने की विद्या सीखी। अग्नि का तरह-तरह से प्रयोग करने में भृगुवंशी पुराने उस्ताद थे। रथ की धीमी चाल में तेज़ी लाने का हुनर दिखलाने वाले वेद-बखाने ऋभु भार्गव ही थे। इसलिए अनक्की ने नये-नये शक्तिशाली हरबे-हथियार बनाने की कला में सिद्धि पाई। उन्होंने सब तरह की शिक्षा पाने के बाद गुरुकुल से निकलकर ऐसे दबे कुचले जन-कबीलों को संगठित करना शुरू किया जो क्षत्रियों के अत्याचारों से पीड़ित थे। उन्होंने उन कबीले वालों को नये हथियार चलाना सिखलाया। इस प्रकार अपने चेलों की एक बहुत बड़ी सेना लेकर और्व ऋषि अपने पिता के हत्यारों का सर्वनाश करने के लिए चल पड़े। चारों ओर क्षत्रियों का संहार होनें लगा। उनका क्रोध थमता ही न था। खैर, और्व महाराज बहुत समझाए-बुझाए गए, उनका ब्रह्म तेज शांत किया गया। सबने मिलकर कहा कि यह ब्राह्मण-क्षत्रिय युद्ध समाज में आत्महत्या के बराबर पाप है।

क्रोध शांत होनें पर खुद महर्षि और्व को भी लगा कि मैं कुछ अधिक अत्याचार कर गया। इसका उचित प्रायश्चित् यही होगा कि मैं किसी अच्छे क्षत्रिय कुमार को बड़े तप से पाई हुई अपनी इन विद्याओं को सिखाऊं और मेरे बजाय वह दुनिया जीते।

जादू के शीशे ने फिर अपनी आंखें मटकाईं और कहा, 'सावधान, अब अपने सर्गोन महान् की कहानी सुनने के लिए तैयार हो जाओ।'

3

राजा सगर अर्थात् सर्गोन महान्

प्रतापी सूर्य या आदित्य वंश की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस वंश के लोगों ने पुराने समय में सारे संसार को सभ्यता का पहला प्रकाश दिखलाया था। यह आदित्य ही अरब आदि देशों में 'आद' कहलाए। इसी से आदमी शब्द निकला। सूर्य को प्रत्यक्ष जीवनदायी और अग्नि को मनुष्य का उपकारक घोषित करने वाले अदिति माता के बेटे अनोखे प्रतापी निकले। उसी सूर्यवंश में आदित्यों के पड़पोते राजा इक्ष्वाकु बड़े प्रतापी हुए। इनके बेटे और उनके वंश मध्य एशिया, यूनान, ईराक और भारत आदि में फैले। पुराने ज़माने में एक कुनबा दुनिया के अलग-अलग हिस्सों पर अधिकार करके पूरी दुनिया का मालिक बन जाता था। राजा इक्ष्वाकु दुनिया के आदिम इतिहास काल में ऐसे ही प्रतापी और सौभाग्यशाली वंशधर हुए थे। राजा बाहु इक्ष्वाकु वंश की इस शाखा के मुखिया थे जो वर्तमान ईराक देश में हुफरात नदी के किनारे, 'अजुतु' यानी अयोध्या के राजा थे। असल में अयोध्या नाम कई जगह रखा गया, इसलिए कभी-कभी हमारे मन में इस नाम को लेकर भ्रम हो जाता है। उत्तर प्रदेश के इक्ष्वाकु वंशियों की अयोध्या जिसमें रघु, दशरथ, राम आदि हुए, राजा बाहु, सगर और राजा हरिश्चन्द्र की अयोध्या से भिन्न है।

एक बार राजा बाहु पर कठिन विपदा पड़ी। हैहय और तालजंघी क्षत्रिय कबीलों ने मिलकर उन पर आक्रमण किया। राजा बाहु अपनी कई रानियों के

साथ जंगल में भागे। बहुत-सी रानियां तितर-बितर हो गईं। एक रानी गर्भवती थी। उसे बड़े जतन से किसी तरह छिपाकर राजा बाहु हैहयों और तालजंघियों की पकड़ से बाहर निकल आए। परन्तु वह बेहद बीमार थे और एक तपोवन के पास पहुंचने से पहले ही वह बेबस होकर गिर पड़े और मर गए। बेचारी गर्भ-वती रानी इतनी दुःखी और निराश हुई कि उसे पति के बिना एक क्षण भा जीना भारी मालूम पड़ने लगा। रोती जाए और आसपास जंगल से लकड़ियां बटोरती जाए। उसके रोने से किसी के कान बजे। उस आदमी ने पास आकर देखा कि एक भले घर की बेचारी औरत मुसीबत में पड़ी है।

वह तपोवन और्व ऋषि का था। उन्हें सूचना दी गई, ऋषि आए, उन्होंने चिता बनाती हुई रानी से पूछा—'बेटी, तुम कौन हो।' रानी के हाल बतलानें पर वे बोले—'बेटी तुम गर्भवती हो। शास्त्र ऐसी स्त्री को सती होने की आज्ञा नहीं देता। तुम्हारे पति का सविधि दाह-संस्कार करने के लिए मैं प्रबन्ध कर दूंगा। आज से तुम मेरी बेटी हुईं और मैं तुम्हारा तथा तुम्हारी होने वाली संतान का संरक्षक हुआ।'

अनक्की उरूर उर्फ और्व भार्गव ऋषि राजा बाहु की गर्भवती विधवा रानी को अपने आश्रम में ले गए। कुछ दिनों के बाद आश्रम में ही रानी ने एक पुत्र-रत्न को जन्म दिया। और्व ऋषि नें बच्चे के जन्म नक्षत्र देखे और प्रसन्न होकर राजा बाहु की पत्नी से कहा—'बेटी तेरा यह पुत्र न केवल अपने पिता के हत्यारों को मारेगा, वरन् सारे संसार के दुष्ट अत्यायी जन एक दिन इसके नाम से कांपेंगे। तेरा बेटा सज्जनों का पोषक, इन्सानी सभ्यता को बढ़ाने वाला पहला संसार विजेता सम्राट होगा।'

हमारे पुराणों में यह कथा भी आती है कि राजा बाहु की एक अन्य पत्नी ने अपनी इस गर्भवती सौत और उसके होने वाले बच्चे को एक बार गरल यानी ज़हर देकर मारना चाहा था, लेकिन कुदरत कभी-कभी अजीब करिश्में दिख-लाती है। वह गरल मां और होने वाले बेटे दोनों को ही पच गया. चूंकि यह

बच्चा गरल सहित पैदा हुआ था इसलिए और्व अथवा उरूर महोदय ने उसका सगर नाम रखा। ईराक के सूर्य मंदिर की खुदाई में जो पुराने लेख निकले हैं उनमें महर्षि और्व की उन शिक्षाओं का भी उल्लेख है जो उन्होंने राजकुमार सगर को दी थीं। एक अंग्रेज़ विद्वान् डा० वैडुल कहते हैं कि योरप में हज़रत मूसा के दस आदेशों की बड़ी महिमा बखानी जाती है, परन्तु महर्षि और्व की ये शिक्षायें जो हज़रत मूसा के जन्म से डेढ़ हज़ार वर्ष पहले दी गई थीं, सभ्यता के उस असली स्रोत का पता देती हैं जहां से हज़रत मूसा तथा अनेक विचारवान मनुष्यों ने चेतना के संस्कार पाए थे।

महर्षि ने चिरंजीवी सगर को सिखाया कि आदित्य सूर्यदेव उस मनुष्य से बहुत प्रसन्न होते हैं जो दूसरों का भला करता है। जो मनुष्य अपने जीवन में झूठा आचरण नहीं करता, अपने सुख के लिए दूसरे की पत्नियों या धन को कभी नहीं छीनता, जिसके मन में किसी के लिए भी कोई बुरा भाव नहीं रहता और बिना कारण विशेष के जो न किसी को मारता-पीटता है, न किसी की जान लेता है, वही सर्व शक्तिमान परमात्मा का सच्चा सेवक है। जिस तरह से आदमी अपना और अपने बच्चों का भला चाहता है उसी तरह से उसे दूसरों का भला भी करना चाहिए। अपने मन की निकम्मी घृणा या शक्ति के मद में बहककर जो कभी दूसरों का बुरा नहीं करता, किसी से घृणा नहीं करता, वही सूर्य को अर्थात् अपनी आत्मा को पहचानता है। वही भगवान का सच्चा भक्त है।

और्व ऋषि के ये उपदेश आज से लगभग पांच-साढ़े पांच हज़ार वर्ष पहले के लोगों के लिए ही नहीं बल्कि आज और आगे आने वाले नये-नये ज़मानों के लिए भी सदा स्फूर्ति देने वाले मंत्र बने रहेंगे।

पहले उत्तम चरित्र के संस्कार जगाकर ऋषि ने सगर को राजोचित शिक्षा देनी शुरू की। कैसे सेना संगठित करनी चाहिए, सेना के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, किन राजाओं पर आक्रमण करना चाहिए, किनसे दोस्ती करनी चाहिए, ये तमाम बातें सगर को सिखलाईं।

जहां तक हरवे हथियारों की बात थी, उसमें तो भृगुवंशी और्व ऋषि लासानी थे। हमारे पुराणों के हिसाब से और ईराक के पुराने लेखों के अनुसार भी और्व ऋषि ने आग्नेयास्त्र ईजाद किया था। ऋषि ने सगर को अपनी उत्तम से उत्तम अस्त्र-शस्त्र विद्या सिखाई। सेनाओं का संगठन करने की कला उन्होंने बड़े तप से सीखी थी, उसे भी बड़े प्रेम से सगर को सिखाया। इस तरह और्व ऋषि ने मानो अपने उस पुराने पाप का प्रायश्चित कर लिया जो अपने क्रोध के कारण क्षत्रियों पर अत्याचार करके उन्होंने किया था।

सगर जब बड़े हुए तो जंगल में काठ के सिंहासन पर अपने आश्रमवासियों और एक बड़ी सेना के सामने सगर का राजतिलक किया। राजा सगर फिर अपनी अयोध्या जीतने के लिए निकले। शत्रु लोग सगर का सामना न कर पाए। अयोध्या ज़ीतकर, अपनी राजधानी में पांव जमाकर, राजा सगर फिर चारों ओर विजय करने के लिए निकले। उन्होंने असुरों का वृक उर्फ एरेक नगर जीत लिया। तांबे की खानों वाले उम्मा प्रदेश के लोगों को परास्त किया। उसने ऊपरी समुद्र यानी भूमध्य सागर से लेकर निचले समुद्र यानी फारस की खाड़ी तक और वहां हिन्द महासागर तक की भूमि अपने भुजबल से जीती। उसने पर्शु अर्थात् पर्शिया, पार्थ और पहलवों को भी जीता। वह सिन्धु नदी का स्वामी बना। यही नहीं ईराकी लेखों के प्रमाण से वह पश्चिम के छोटे वाले द्वीपों तक अर्थात् वर्तमान आयरलैण्ड ओर ब्रिटेन तक का विजेता बना।

इस तरह राजा सगर अर्थात् सर्गोन महान दुनिया का पहला चक्रवर्ती राजा बना। उसने जिस भूमि को जीता वहां के मनुष्यों को सुसभ्य बनाया। इस तरह सगर या सर्गोन मानव सभ्यता का प्रचारक बनकर हमारी दुनिया का एक याद रहने लायक महापुरुष बन गया।

4

अगस्त्य मुनि

हिन्दू पुराणों में अगस्त्य जी का नाम बहुत बार आता है। दक्षिण भारत में इन्हें कूटमुनि भी कहा जाता है। इन्हीं कूटमुनि अथवा अगस्त्य जी के साथ हमारी एक दक्षिण भारतीय भाषा का भी घना संबंध माना जाता है। कहते हैं कि अगस्त्य मुनि ने ही तमिल भाषा की पहली व्याकरण बनाई।

इन अगस्त्य ऋषि की एक कथा आमतौर से बड़ी प्रसिद्ध है। कहते हैं कि एक बार विन्ध्याचल पर्वत इतना ऊंचा उठ गया कि सूर्य देवता के आने-जाने के मार्ग में बाधा पड़ने लगी तब देवों को बड़ी चिन्ता हुई। उन्होंने विन्ध्याचल के गुरु अगस्त्य मुनि से प्रार्थना की कि महाराज आप ही इसका कोई उपाय सुझा सकते हैं। अगस्त्य मुनि ने विचार किया और देवों से कहा कि आप निश्चिन्त हो जाइए मैंने उपाय सोच लिया है। यह कहकर अगस्त्य मुनि विन्ध्याचल की ओर चल दिए।

गुरु को आया जानकर विन्ध्याचल ने सिर झुकाकर उनके चरणों में प्रणाम किया और कहा कि गुरुजी मेरे लिए आपकी क्या आज्ञा है ?

गुरुजी ने कहा—'हे शिष्य, जब तक मैं लौटकर न आऊं तब तक तू यों ही झुका रह।' यह कहकर अगस्त्य मुनि विन्ध्याचल के पास दक्षिण भारत में चले गए।

इस कथा में किसी पहाड़ के इन्सानी गुरु का अविश्वसनीय करिश्मा जुड़ा देखकर अक्सर लोग इसके महत्त्व पर ध्यान नहीं देते हैं। हमारी पुराण की कथा के अनुसार राजा सगर का महायज्ञ हिमालय और विन्ध्याचल के बीच की भूमि पर हुआ था। इसका यह अर्थ हुआ कि तब तक आर्य लोग विन्ध्याचल के पार न जा सके थे। अगस्त्य मुनि अलबेले घुमन्तू थे। उन्होंने इसी विन्ध्याचल में कहीं से दक्षिण में जाने के लिए एक खिड़की खोल ली। अगस्त्य मुनि के संबंध में दक्षिण भारत में कई कथाएं प्रचलित हैं और इनका जिक्र ऋग्वेद के ऋषियों में भी आता है।

दक्षिण भारत से समुद्र पार हिन्दचीन और इण्डोनेशिया तक घूम-घूमकर सभ्यता का प्रचार करने वाले इन अलबेले ऋषि के पुरखे अगस्त्य प्रथम मैत्रावरुण नामक देव कबीले के थे। उनकी माता उर्वशी थी। इस तरह वह वशिष्ठ के भाई थे। उनका विवाह लोपामुद्रा नाम की एक विदुषी महिला से हुआ था जो स्वयं भी ऋषि थी। लोपामुद्रा के पति अगस्त्य ऋषि और विन्ध्याचल पार करके दक्षिण जाने वाले अगस्त्य मुनि एक कुल के होने पर भी दो अलग-अलग ज़मानों में पैदा हुए थे। बहरहाल जो अगस्त्य मुनि दक्षिण भारत और ठेठ हिन्दचीन, इण्डोनेशिया तक पूज्य हैं। वे भी ईसा से कई सौ वर्ष पहले ही हुए होंगे।

एक तमिल कहानी के हिसाब से अगस्त्य जी महाराष्ट्र के कोंकण वाले क्षेत्र से होकर समुद्र के द्वारा कुर्ग पहुंचे थे। इस कुर्ग देश में कुडग जाति के लोग रहते थे और एक नदी का उदगम स्थान भी वहीं था। यही नदी बाद में कावेरी के नाम से प्रसिद्ध हुई। वहां के तमिल या द्रविड़ राजा कुबेर ने अगस्त्य के समान विद्वान को अपने यहां आया जानकर उन्हें सादर बुलवाया और उनसे बातें कीं। राजा कुबेर अगस्त्य जी से इतना प्रभावित हुआ कि उसने पहले तो उन्हें अपना मंत्री बनाया और बाद में अपनी बेटी कावेरी का विवाह भी उन्हीं के साथ कर दिया।

उन दिनों चोल राज्य में कोई भी नदी न होने से सारा देश सिंचाई के बिना सूखा पड़ा था। जब चोल राजा ने सुना कि कुबेर के जमाई और मंत्री बड़े हुनरमन्द हैं तो उसने कुबेर राजा की मार्फत उनसे प्रार्थना की। उसने अगस्त्य से कहा कि किसी उपाय से एक नदी आप हमारे देश में भी बहा दीजिए तो हमारा बड़ा कल्याण हो। अगस्त्य मुनि ने उसकी बात पर गहरा विचार किया और सब नदियों की शक्ति पहचान कर उन्होंने कावेरी नदी की धारा को, जो अरब सागर में गिरती थी, पूर्व की ओर एक नहर निकाल कर बहा दिया। इस तरह कावेरी नदी चोल देश में बहती हुई बंगाल की खाड़ी में गिरने लगी। सारी भूमि हरी-भरी हो उठी। जन-जन अगस्त्य जी की महिमा गाने लगा। लोगों ने अगस्त्य का इतना उपकार माना कि इस नदी का नामकरण उनकी परम प्रिया पत्नी के नाम पर ही किया। अगस्त्य ऋषि ने तमिल भाषा का संस्कार किया। वहां की संस्कृति को कई तरह से उन्नत किया और फिर अपने भ्रमण के हौसले से वे समुद्र पार कर हिन्दचीन और इण्डोनेशिया तक गए। इण्डोनेशिया में अगस्त्य जी को शिव का अवतार, एक महान् गुरु और भगवान बुद्ध के बराबर माना जाता है। धन्य हैं वे जन जिन्होंने दूर-दूर तक मानव सभ्यता को सुसंस्कार देने के लिए उस पुराने ज़माने की समुद्री यात्राएं कीं, जब कि ऐसा करना भय से खाली नहीं था। अगस्त्य मुनि ने निर्भीक होकर यात्राएं कीं और सभ्यता की आवाज़ दूर देशों तक पहुंचाई। इस प्रकार चिड़ियों जैसे निरीह प्राणियों की सन्तानों को उबारने के लिए अगस्त्य मुनि सचमुच ही समुद्र को सोख गए थे।

5

हज़रत मूसा

अगस्त्य मुनि के साथ हमारा जादुई दर्पण जो समुद्र पार गया तो उसने ऐसे महामानव की झलकियां भी हमें दिखाने की ठानी जिनका सगर और और्व की तरह यद्यपि हमारे पुराणों से कोई नाता नहीं है फिर भी उन देवताओं से अवश्य है जो यहूदी धर्मावलंबियों के अनन्य आराध्य हैं। यहोवा या जाह्वेह के लिए ऋग्वेद में एक मंत्र आया है। यह्व देव को हमने अग्नि के रूप में भी देखा है। इस प्रकार हमारे पुरखों की धार्मिक शैलियों में अन्तर होते हुए भी हम दोनों के बीच एक पुराने सांस्कृतिक आदान-प्रदान का भाईचारा अवश्य है। उन्हीं यहूदियों के समाज में, ईसा के लगभग डेढ़ हजार वर्ष पहले मूसा का जन्म हुआ था। सुनते हैं कि वे अनाथ थे। जब वे बच्चे ही थे तब सौभाग्य से मिस्र देश के सर्व शक्तिमान फ़रऊन अर्थात् सम्राट् की बेटी के लाडले बन गए। फ़रऊन के महल में राजकुमारों की तरह हज़रत मूसा का पालन-पोषण हुआ। इनको अपने ज़माने की अच्छी से अच्छी शिक्षा मिली। मिस्र के एक सम्राट् अख़नातून ने अपने देश से बहुत सारे देवी-देवताओं की पूजा का चलन हटाकर एक-देववाद का प्रचार किया। इसके कारण मिस्री जनों के मन में असन्तोष घुमड़ रहा था।

जब पढ़-लिखकर जवान हुए तो मूसा महोदय को इथियोपिया देश का

विद्रोह दबाने के लिए भेजा गया। हज़रत मूसा जब इथियोपिया से लौटे तब दो चीज़ें उनके साथ थीं, बाहरी तौर पर एक शानदार विजय का नया कीर्तिमान् और भीतरी तौर पर युद्ध के दृश्यों से उपजे हुए सवालों की हलचल से भरा अधीर मन। काहिरा पहुंचने पर सम्राट् की ओर से उनका यथोचित मान हुआ। पद मर्यादा में भी वृद्धि हुई। किन्तु सवालों-भरे अधीर मन ने मूसा को इस दुनिया की लालचों में पड़ने से रोक लिया। वे काहिरा से हैलियोपोलिस (सूर्यपुर) चले आए। वहां के एक प्रसिद्ध धर्म संघ में सम्मिलित होने के लिए उन्होंने अपना सिर मुड़ाया, संसारी वस्त्र त्यागे और भिक्षु का वेश धारण किया। वे गम्भीर रूप से धर्म का अध्ययन करने लगे। लेकिन इस गम्भीरता का मतलब कोई यह न समझे कि वे आठों पहर केवल माला-पोथी के ही होकर रह गए थे। उन्होंने अपने धर्म संघ महाविद्यालय में कसरत, कुश्ती आदि शारीरिक स्वास्थ्य के खेलों में बराबर अपनी रुचि को सजीव रखा।

हज़रत मूसा ने इस धर्म संघ महाविद्यालय में भी अपने लिए ऐसी ख्याति कमाई कि यहां से विद्वत्ता का सर्टीफ़िकेट लेकर काहिरा में महंत पद पर पुज सकते थे। मगर होनी कुछ और थी।

हज़रत मूसा यहूदी होने के नाते एक जगह पर प्रबल हठी चरित्र के थे। जिस दिशा में अब उनका जीवन मुड़ गया था उसमें उनके लिए झूठी दुनियादारी में सुख नहीं रह गया था। उनकी विद्रोही प्रकृति धर्म का गहरा अध्ययन और मनन करने से वैसी ही पैनी हो गई थी जैसी कि उनके सदियों बाद हमारे देश के संत कबीर में हमें दिखलाई दी थी। महाविद्यालय की शिक्षा पूरी करने के बाद वे फिर राजधानी में लौटकर तो आए परन्तु उसकी भव्य सड़कों की ओर न गए। उन शानदार महलों और कोठियों के दरवाज़े जो हज़रत मूसा के लिए सदैव खुले रहते थे, उन्होंने अपने ही हाथों से बन्द कर लिए। वे गरीब मज़दूरों की बस्ती में जाकर बस गए। उन दिनों मिस्र

में ईंटें बनाने और पकाने का काम यहूदी मज़दूर ही किया करते थे। एक जाति जब बुरे दिनों के फेर में हीन बन जाती है तब ऊंची, यानी खाते-पीते खुश शक्ति-सम्पन्न लोगों की जाति के लोग तरह-तरह से उसका मखौल उड़ाते हैं। यहूदियों का भी यही हाल था।

मिस्री सामन्तों के वातावरण में राजकुमार की तरह पले हुए मूसा बचपन में अपने चारों ओर यहूदियों के संबंध में जो कुछ सुनते थे उसी पर एक तरह से उनका विश्वास भी जम गया था। वे समझते थे कि यह यहूदी मज़दूर बड़े उजड्ड गंवार होते हैं। वे कोड़ों की मार से ही सभ्य बनाए जा सकते हैं। भले आदमियों को ऐसे पशु समान मनुष्यों की चिन्ता भी नहीं करनी चाहिए। लेकिन मूसा जब उनके बीच में रहने के लिए आए तो उन्होंने देखा कि इन्सान की खूबियां केवल आभिजात्य समाज में ही नहीं बल्कि इन मज़दूरों के पास भी हैं। जो मूसा अब तक अपने यहूदी होने के कारण मन ही मन में लज्जित होते थे, वे अब उन पर गर्व करने लगे। उन्होंने उरु यानी वर्तमान ईराक देश छोड़कर अपने महान् पुरखे अब्राहम के साथ एक रेगिस्तान में आ बसने की कथा सुनी। उन मज़दूरों के बीच हज़रत मूसा ने सुना कि भगवान ने यहूदियों को एक ऐसा नगर प्रदान करने का वचन दे रखा है जिसमें दूध की नदियां बहेंगी और शहद के कुण्ड बने होंगे। जब तक वह नगर नहीं मिलता तब तक यहूदी यों ही मारे-मारे भटका करेंगे।

मूसा स्पष्ट देख रहे थे कि इस तरह मारे-मारे डोलने से एक जाति का नैतिक स्तर इस हद तक गिर गया है कि अपना 'पापी पेट' पालने के लिए उन्हें मिस्रियों की गुलामी करनी पड़ रही है। हज़रत मूसा के मन में एक लगन-सी लग गई है कि किसी तरह इन दबे-कुचले हुए लोगों को मुक्त जीवन प्रदान करना ही चाहिए।

मूसा काहिरा में रहें और उनके परिचितों को पता न चले, यह बात तनिक असंभव थी। शासन के लोगों ने हज़रत मूसा को कई बार टोका कि

इन परदेशी दरिद्रियों का साथ छोड़ दें, परन्तु मूसा ने इन बातों पर कुछ ध्यान न दिया। सदा एक कान से सुना और दूसरे से निकाल दिया। एक दिन यहूदी मज़दूर जब भट्ठे पर काम कर रहे थे तब हज़रत मूसा भी वहां अकस्मात् किसी कारण से पहुंच गए। बानक ऐसे बने कि जिस समय वे पहुंचे उस समय मिस्री अफसर एक यहूदी मज़दूर को राक्षस की तरह से पीट रहा था। हज़रत मूसा से ऐसी अमानुषिकता देखी न गई; कुछ उनका यहूदी खून भी जोश खा उठा। उन्होंने झपट कर उस अफसर की गर्दन दबोच ली और उसे मार डाला। क्रोध क्षण-भर के लिए ही आता है लेकिन वह क्षण मनुष्य के लिए अन्धा होता है। हत्या का अपराध कर चुकने के बाद हज़रत मूसा के लिए अब राजधानी में सुरक्षित रहना असंभव था।

यह अनाथ यहूदी जो राजकुमारों की तरह से पला और अपनी ही इच्छा से फकीर होकर मज़दूरों के बीच में रहने वाला बन गया था, अब अपराधी बनकर जो यहां से भागता है तो अरब के रेगिस्तान के किनारे एक चरागाह में शरण पाकर गड़रिया बन जाता है। हम यों भी सोच सकते हैं कि भगवान जिसे मनुष्य जाति का एक महान् गुरु बनाना चाहते थे उसे इस प्रकार के जीवन की झलक दिखलाते हुए वे अनुभवी बना रहे थे। यह चरागाह ही मानो उन्हें बरसों से बुला रही थी; शायद यहां आने के लिए ही वे अब तक और कहीं न टिक पाए थे। यहां इन्होंने हरियाली और रेगिस्तान के बीच में खड़े होकर भयानक सुनसान में सच्चिदानंद के दर्शन किए। वे सवाल जो इन्हें अब तक किसी करवट भी चैन न लेने देते थे, अब अपने आप हल होने लगे। हज़रत मूसा को अपनी आत्मा का प्रकाश मिल गया। वे अब एक सिद्ध पुरुष थे।

इस रेगिस्तानी चरागाह में उन्होंने योग साधना भरे कई वर्ष बिताये। इस गड़रिया जीवन में हज़रत मूसा ने एक साधु स्वभाव की देहाती युवती से विवाह भी कर लिया था। वे हर तरह से संतुष्ट और ईश्वरलीन जीवन बिता रहे थे एकाएक मिस्र जाने की इच्छा उनके मन में धीरे-धीरे प्रबल हो उठी।

असल में उन्हें यह खलता था कि वह खुद तो अपनी जान बचाकर चले आए मगर उनके सैकड़ों मज़दूर भाई-बन्धुओं को उनके भाग आने के कारण न जाने क्या-क्या अत्याचार सहने पड़े होंगे। मूसा की आत्मा कहती थी कि उन मज़दूरों को उनके कष्टों से छुटकारा दिलाना चाहिए।

मिस्र पहुंचकर वे सीधे मज़दूर बस्ती में गए। वहां के हालचाल जाने। पुराने सम्राट् मर चुके थे, नये गद्दी पर विराजमान थे। मूसा ने उनसे मिलने का निश्चय किया। उन्हें सम्राट् से मिलने का अवसर भी प्राप्त हो गया। उन्होंने सम्राट् से कहा कि यहूदी गुलामों को अपनी दासता से मुक्त कर दो।

सम्राट् को लगा कि उसके सामने फकीर नहीं बल्कि एक दूसरा सम्राट् खड़ा हुआ उसे हुक्म दे रहा है। सम्राट् ने मूसा से पूछा—'किस अधिकार से तुम ऐसी मांग कर रहे हो ?'

'आप से यह मांग करने का अधिकार मुझे ईश्वर ने दिया है।'

फ़रऊन तप उठा, उसने पूछा—'कौन है तुम्हारा ईश्वर ? कहां है उसका राज ? कितने दिनों से राज करता है तुम्हारा ईश्वर ?' सम्राट् के इस दम्भ-भरे स्वर को मूसा की शांत मुस्कराहट ने जीत लिया, वे बोले 'ईश्वर इस ब्रह्माण्ड में सब जगह रहता है। यह दुनिया, यह चांद-सितारे जब नहीं थे तब भी ईश्वर था, और जब यह दुनिया नहीं रहेगी तब भी ईश्वर रहेगा। हे सम्राट्, यह मत भूलो कि ईश्वर परम न्यायी है। वह सबका राजा है। उसके धनुष के तीर दहकते अंगारे हैं, उसका भाला ज्वाला की लौ की तरह नोकीला है और उसकी तलवार में बिजलियां कौंधती हैं। हे सम्राट्, ईश्वर के न्याय से डरो। गरीबों को मत सताओ।'

सम्राट् यानी फरऊन बोले— 'धरती हो या आसमान, यह सब कुछ मेरा है। मैं ही सर्वशक्तिमान हूं। तुम्हारी मांग का जवाब यही है कि कल से इन मज़दूरों को दुगुनी ईंटें पकानी पड़ेंगी। हर शाम अगर एक भी ईंट गिनती में कम निकली तो उसके बदले में किसी मज़दूरनी को अपनी गोद का

एक बच्चा खोना पड़ेगा ।'

कहते हैं कि ईश्वर ने सम्राट् को अपना चमत्कार दिखला दिया । राजधानी में तीन बार प्लेग की महामारी फैली । सम्राट् का सर्वनाश हुआ । हज़रत मूसा अपने मज़दूर सजातियों को लेकर मिस्र से निकल गए । सिनाई पहाड़ के पास हज़रत ने अपना पड़ाव डाला और वहीं चेलों के साथ बस गए । उन्होंने अपने असभ्य, फूहड़, गन्दी आदतों वाले, मगर सोने के समान खरे दिल वाले मज़दूर साथियों को अपने उपदेशों से सभ्य समाज में बदल दिया । हज़रत मूसा के उपदेशों ने केवल यहूदी ही नहीं वरन् अन्य सभ्यताओं को भी प्रभावित किया । मूसा इन्सान के एक अविस्मरणीय पुरखे थे ।

6

राम-रावण युद्ध

हज़रत मूसा के दर्शन कराने के बाद दर्पण एकाएक गाने लगा—

इक राम हते इक रामन्ना ।
ये छत्री वो बामन्ना ।।
याकी तिरिया वाने हरी ।
वाकी किरिया याने करी ।।
बात का हुइगा बातन्ना ।
तुलसी लिखि गये पोथन्ना ।। हः हः हः

मैंने कहा—'अरे दर्पण, अच्छी-भली कहानियां सुनाते-सुनाते तुम यह क्या अल्ल-बल्ल बकने लगे ? कहां तो वे अच्छी-अच्छी कथाएं और कहां यह किसी लोक कवि की टूटी-फूटी पंक्तियां !'

'वाह भाई, तुम मेरी लाख टके की बात को अल्ल-बल्ल बकना कहते हो । अरे, इसी में राम-रावण की लड़ाई का असली इतिहास छिपा हुआ है ।'

'कैसे ?'

'सुनो ! लेकिन राम की कथा का ऐतिहासिक महत्त्व जानने के लिए तुम्हें पहले उनके शत्रु रावण के बारे में भी जान लेना आवश्यक है । राम-रावण या कुबेर अलग-अलग मानव जातियों के नहीं थे । हां, इन लोगों

ने अलग-अलग जातियों पर राज करना आरम्भ कर दिया था। राम यदि सूर्य वंश के आर्य थे तो रावण पुलस्ति वंशी आर्य था।'

'तब क्या यह आर्यों-अनार्यों का युद्ध नहीं था ?'

'आर्यों-अनार्यों का युद्ध भी था और आर्यों-आर्यों का भी।'

'तब लड़ाई किस बात की थी ?'

'भाई, मनु के वंशज मानव कहलाते थे और पुराने समय में मनु के वंशजों का बाबुल अर्थात् बेबिलोन से लेकर भारत देश तक फैलाव फैला हुआ था। यह लोग उत्तर कुरु के देव कहे जाने वाले आर्यों को अपना मित्र मानते थे। मध्य एशिया का सम्राट्, देवकुल का इन्द्र उर्फ इन-दर या इन-दुर अथवा इन-थोर भारत से लेकर मध्य एशिया तक अनेक आर्य जातियों में समान रूप से पूजित था। यह एक तरह से पुराने आर्यों का मुखिया था। ऐसे इन्द्र तक को रावण दशग्रीव के बेटे मेघनाद ने हराया था। राजा रामचन्द्र के पुरखे राजा अनरण्य भी एक रावण के हाथों ही मारे गए थे।'

'ठहरो दर्पण, क्या तुम यह बतलाना चाहते हो कि रावण किसी व्यक्ति का नाम नहीं वरन् पद का नाम है ?'

'हां भाई हां, तमिल भाषा में राजा को 'इरवण' कहते हैं—और मान लो कि यदि मैं कुबेर के भाई रावण को ही एक नामधारी व्यक्ति और राम का शत्रु मान लूं तो जानते हो क्या तमाशा होगा ?'

'क्या होगा ?'

'तब रावण भगवान रामचन्द्र से पूरे एक हज़ार या नौ सौ वर्ष बड़ा हो जाएगा। ऐसा बूढ़ा रावण भला जवान राम से कैसे लड़ सकता है ?'

'सच कहते हो ?'

'पुराणों की वंशावलियों को ध्यान से देखने पर तुम्हारे मन से यह सारे सवाल अपने आप ही समाप्त हो जाएंगे। तुम्हें यह भी पता लगेगा कि आर्य जाति के होते हुए भी देव, दैत्य, दानव, असुर, नाग, गन्धर्व और मानव एक बड़े

क़बीले से बंटकर दूर-दूर चले जानें और दूसरी जातियों की संस्कृतियों में घुल-मिल जाने पर एक-दूसरे के लिए एकदम से पराये पड़ गए थे। रावण, वशिष्ठ, भृगु, अत्रि आदि वंशों के ब्राह्मण अग्नि वंशी कहलाते थे और इनका वंश ब्राह्मण वंश कहलाता था। ब्राह्मणो ने बढ़ने और फैलने के सिद्धांत में विश्वास किया, परन्तु मध्य एशिया के क्षत्रिय इतने गुस्सैल थे कि क्रोध आने पर ज़रा-सी बात में वे आपस में एक-दूसरे की मार-काट मचा देते थे। इन ब्राह्मण-क्षत्रियों के झगड़े उन दिनों में ईराक से लेकर हमारे देश के उत्तरी भाग तक काफी फैल चुके थे। जैसा कि मैंने तुम्हें बताया कि एक रावण ने राम के पुरखे अनरण्य को मारा था। अनरण्य के बाद, सगर के पिता राजा बाहुक के समय में भृगुवंशी ब्राह्मणों ने क्षत्रियों का नाश किया। फिर अश्मक राजा के समय में ऐसा ही सर्वनाश हुआ। इसलिए इक्ष्वाकुवंशी मध्य एशिया से भाग कर फिर उसी अयोध्या में आ बसे जिसे राजा नाभि ऋषभ, भरम आदि ने कभी अपनी राजधानी बनाया था। धीरे-धीरे कुछ पीढ़ियों में उन्होंने ऐसा शक्तिशाली संगठन कर लिया था कि उसके बांद के रावण अयोध्या के इक्ष्वाकुवंशियों को जीत न पाए।

'इस वंश के राजा रघु ने बड़ा नाम किया। उनके समय में यह हेत या हिट्टी लोग सिंध, पंजाब तक उतर आए थे। यह राजा रघु का ही प्रताप था कि उनके डर से खैबर दर्रे वाला रास्ता हिट्टियों के लिए बन्द हो गया। महाराज रघु ने अफ़ग़ानिस्तान, ईरान आदि जीत लिया। वहां की ईसिन अथवा ईशिन नामक राजधानी पर उनका अधिकार हुआ। सम्भवतः हिट्टी या हेति इसी घटना के बाद ही समुद्र के रास्ते से लंका पहुंच गए और लंका को अपना अड्डा बनाकर उन्होंने दक्षिण भारत के काफी भाग में अपना आधिपत्य जमा लिया। तब तक हेति या हिट्टी कुल वाले एकदम वीरविहीन नहीं हो गए थे। इनके इस घराने में माली, सुमाली और माल्यवान नामक तीन भाई बड़े प्रतापी हुए। उन्होंने अफ्रीका, मिस्र आदि पर-अपना अधिकार कर लिया। राम के परम शत्रु दशग्रीव नामक रावण के नाना सुमाली के नाम पर अब तक

सोमालीलैण्ड चला आता है ।

इसी सोमाली की बेटी ईरान के पुलस्ति ऋषि के वंश में विश्रवा को ब्याही गई थी । विश्रवा का एक बेटा कुबेर भी था । कुबेर ने लंका पर अधिकार कर लिया था । फ़ारस की खाड़ी के बाद लंका के आसपास हिन्द सागर में ही अच्छे और मूल्यवान मोती पाये जाते थे, इसलिए कुबेर कुछ ही दिनों में बहुत मालदार हो गए थे । राजा रघु के आक्रमण के बाद ईरान का पुलस्तिवंशी दशग्रीव रावण अपने देश से करीब-करीब उखड़ गया था । अपने मामाओं की सहायता से रावण ने अपने बड़े भाई से लंका छीन ली और वहां जम गया । उसने दक्षिण भारत का बहुत-सा भाग जो उसके अधिकार में था वहां खरदूषण तथा शूर्पणखा के पति आदि को रावण ने सूबेदार बनाकर भेज दिया ।

'किन्तु राम और रावण की लड़ाई होने का असली कारण क्या था ?' मैंने पूछा ।

'असली कारण यह था कि रावण उस क्षत्रिय वंश को मुसीबत में फंसा देखकर उजाड़ देना चाहता था, जिसके कारण उसे ईरान, सिन्ध आदि स्थानों से हटना पड़ा । उन दिनों रावण का बेटा मेघनाद इन्द्र को हराने के लिए मध्य एशिया पर चढ़ाई करने गया हुआ था । इससे पहले जब इन्द्र पर इन्हीं हिट्टी असुरों का आक्रमण हुआ था तो अयोध्या से लेकर ईशिन तक के राजा दशरथ ने इन्द्र की सहायता की थी । उसी दशरथ के ज्येष्ठ और छोटे पुत्र इस समय जंगल में भटक रहे थे । रावण ने दुर्गति में पड़े हुए राजकुमारों को अपमानित करने के लिए ही सीता का हरण किया । सोने के मृग की असली कथा यह है कि रावण ने स्वर्ण रूपी हिरण से जंगलवासियों को अपने वश में कर लिया । उनसे राम और लक्ष्मण को धोखा दिलवाया तथा सीता को हर ले गया ।

'वह समझता था कि यहां पर यह दुखी राजकुमार भला उसका बिगाड़

ही क्या सकेंगे। और जब ये दोनों राजकुमार अपमान सहते-सहते और सीता के विरह में तप-तपकर पागल हो जाएंगे तो इन्हें सहज ही नष्ट करके उस अयोध्या को भी उजाड़ दिया जाएगा जिसके कारण उसको एक बार और पराजय सहनी पड़ी थी।

'संयोग की बात कि इस समय तकदीर का पांसा रावण के पक्ष में ही पड़ रहा था। मेघनाद इन्द्र को हराकर उसे बांध लाया। सुमेरु अर्थात् आज के अल्ताई पहाड़ तथा मिस्र के देश के स्वर्ण भण्डारों पर रावण का अधिकार हो गया। अरबों रुपयों की लूट के वैभव से छोटा-सा लंका टापू सचमुच सोने का भण्डार बन गया था। इन सब बातों के ऊपर यह सीताहरण का यश भी दशग्रीव को आनन्दमग्न कर रहा था। इन हिट्टियों या हेतियों की एक और विशेषता का पता इसी सीताहरण काण्ड से यों लगता है कि जिस रथ में रावण सीता को भगाकर ले गया था वह रथ छोटा था और उसमें घोड़ों की जगह पर गधे जुते हुए थे। मध्य एशिया, एशिया माइनर तथा मिस्र में आज भी बाइज़्ज़त घोड़ों की जगह गधे इस्तेमाल किए जाते हैं।

'राम को संयोग से बालि का भाई सुग्रीव मिल जाता है। वानर से आमतौर पर लोग यह समझ लेतें हैं कि वे सब बन्दर थे। यह बात सच नहीं है। वानर के मानें पुरुष के होते हैं, और एक संयोग की बात यह है कि राम और वानर हनुमान दोनों ही मूलमरुत गण के थे। लांगूल का एक अर्थ पूंछ के अलावा हल भी होता है, इसलिए यह सिद्ध हो जाता है कि इन लांगूलधारी वानरों से ही खेती आरम्भ हुई थी। विद्याधर वानर हनुमान इसीलिए आज तक किसानों के परम इष्ट देव हैं।'

'राम ने जो सबसे बड़ा पौरुष दिखलाया वह यही है कि वे सीता के खो जाने पर भी हिम्मत न हारे। वानरों और ऋक्षों की सहायता से उन्होंने सीता की खोज कर ली। पौरुषवान्, युक्तिवान्, कुशल विद्याधर वानरों के बीच में ही नल-नील ऐसे इंजीनियर भी थे जिन्होंने रावण की लंका तक

पहुंचने के लिए पत्थरों का एक पुल तैयार कर दिया। राम की युक्तियों ने लंका पर आक्रमण करने से पहले, सारे दक्षिण भारत से रावण के राज्य का नाम-निशान तक मिटा दिया। खर-दूषण आदि सारे राक्षस मारे गए और दक्षिण भारत राक्षसों से मुक्त हो गया।'

'लेकिन लंका में हेतियों से मोर्चा लेना बड़ा ही कठिन काम था। हेति लोग माया-युद्ध करनें में बड़े ही प्रवीण थे। इनके सिपाही मुखौटे लगा-लगाकर लड़ते थे और उन मुखौटों को वे जल्दी से बदलकर अपना रूप कुछ से कुछ बना लिया करते थे। इसके अलावा इनकी लड़ाई में एक खास बात यह थी कि यह लोग बहुत बड़ी संख्या में अचानक शत्रुओं पर छापा मारते थे। छापा मारने के लिए कौन-कौनसी युक्ति किस समय की जाए, इस बात का ध्यान रखा जाता था। शत्रु की किन शक्तियों से बचना चाहिए, उन शक्तियों को कैसे बिखेरना चाहिए, हवा की तरह अदृश्य बन कर शत्रु की राजधानी में कैसे घुसें और कैसे उस पर कब्ज़ा करें, इन तमाम बातों का ध्यान रखना ही माया-युद्ध की विशेषता थी।'

'रामचन्द्र ने रावण को हराने के लिए इन सभी बातों पर गहरा ध्यान दिया था। यही कारण था कि वे अर्ध सभ्य लड़वैयों की भीड़ लेकर भी रावण जैसे चतुर से जीत गए। लेकिन यह जीत पाने से पहले राम भी रावण की सेना से कई बार चकमा खा चुके थे। इन्द्र को जीतने वाले रावणनन्दन मेघनाद ने राम की सेना पर जो पहला आक्रमण किया था वह रात के समय किया था। उसने अपनी सेना इस तरह से बांटकर फैलाई थी कि जिससे वानर इस भ्रम में पड़ जाएं कि सेना बहुत बड़ी है और वे उससे पार नहीं पा सकेंगे। इस घबराहट बढ़ाने वाले उपाय के साथ-साथ मेघनाद ने किसी ऐसी औषधि का प्रयोग भी किया था जिससे बड़े-बड़े वानर सरदार तक बेहोश होकर उनकी रस्सियों में बंध गए। स्वयं राम और लक्ष्मण भी अचेत होकर पाशबद्ध हो गए थे। वह तो कहिए कि समय पर सहायता लेकर हनुमान पहुंच गए और

उन्होंने बेहोश तथा बंधे पड़े हुए राम-लक्ष्मण को शत्रु के हाथों में पड़ने से रोक लिया।'

'हेतियों की जीत का सबसे बड़ा कारण ही लंका में इनकी हार का मुख्य कारण भी बना। हेति लोग असल में रथों की लड़ाई लड़ने में उस्ताद थे। उनके रथ बहुत ही उम्दा बने हुए होते थे। जैसे आजकल लड़ाइयों में टैंक चलते हैं, उसी प्रकार हेतियों के रथ भी कोठरीनुमा बन्द होते थे। उनमें बाण चलाने के झरोखे बने रहते थे। इन रथों में बैठकर शत्रु पर बाण वर्षा करने वाला वीर दूसरों के तीरों की मार से बचा रहता था। इन रथों से वे पैदल लड़वैयों को घेरकर कुचल देते थे।'

'रामचन्द्र ने रावण की यह रणनीति पहचान ली। उन्होंने शक्ति को युक्ति से जीत लिया। उन्होंने यह देखा कि बड़े-बड़े मैदानों में रथों के कुशल संचालन से जीतने वाले यह प्रतापी हेति लोग लंका टापू में सकड़ी जगह होने के कारण अपने रथों का वैसा फैलाव नहीं कर पाते जैसा कि आमतौर पर उनकी नीति के अनुसार हुआ करता था। राम ने अपने शत्रुओं की यही सीमा पहचान कर अपने वानरों को इस तरह से लड़ने के लिए प्रशिक्षित किया कि वे उनके रथों को अलग-अलग घेरकर उन्हें नष्ट कर देते थे। इस प्रकार रथ के लड़वैये अपने रथों का नाश होने पर पैदल उतर कर लड़ने के लिए मजबूर होते थे, और यही पैदली लड़ाइयां हेतियों को मात पर मात देती चली गईं। दशग्रीव रावण और उसका उद्दण्ड प्रतापी परिवार राम की सूझ-बूझ और उनकी रणनीति के कुशल संचालन से मारा गया। श्रीराम से लगभग एक हज़ार वर्ष पूर्व से जिन हेतियों ने पृथ्वी पर अपना दबदबा जमा रखा था, वे इसके बाद क्रमशः इतिहास से ही लोप हो गए। श्रीराम ने दक्षिण और उत्तर दोनों दिशाओं से हेतियों को समाप्त कर दिया। यही नहीं, ईरान में भी उन्होंने नई गति की। पहले न जीते हुए क्षेत्रों को जीता और साथ ही साथ ईराक में स्थित राजा सगर अर्थात् सर्गोन महान् की अयोध्या भी अपने

अधिकार में कर ली । हुफ़रात की अजुतु से सरयू स्थित अयोध्या तक और लंका से कश्मीर तक प्रतापी सम्राट रामचन्द्र ने प्रजा को अत्याचारी दुष्टों के निर्मम पंजों से छुड़ाकर उसे हर प्रकार से संतुष्ट करने के ऐसे उत्तम उपाय किए कि उनका रामराज आज तक बखाना जाता है । हुफ़रात तट के सूर्य मन्दिर में मिलने वाली वंशावलियों में श्रीराम का नाम आने का यही कारण है । राम-रावण का युद्ध इस रूप से इतिहास का एक बीता हुआ पृष्ठ ही है । राम कथा में आध्यात्मिकता अथवा भक्ति के चाहे कितने ही सुन्दर तत्त्व मिलकर उसे एक नया और गहरा अर्थ दे गए हों पर राम-रावण युद्ध वस्तुतः एक ऐतिहासिक युद्ध है जो ईसा से लगभग पंद्रह-सोलह सौ वर्ष पूर्व हुआ था ।



7

योगीराज श्रीकृष्ण

मेरा जादुई दर्पण सहसा सतरंगा हो उठा, साथ ही वंशी की मधुर तानों से मेरे मन का कोना-कोना गूंज उठा। मैंने हरख कर कहा –'दर्पण तुम तो सच्चा इतिहास ही झलकाते हो, फिर इतने रंगीन क्यों हो उठे ?'

'तुम्हारे सामने मानव इतिहास का एक ऐसा महापुरुष आ रहा है जिसने हम सबके जीवन को अपने कर्मरूपी रंगों से भर दिया था। वह बूढ़े-बूढ़ियों के लिए नटखट कान्हा था, साथियों के लिए माखनचोर गोपाल, साथिनों के लिए मुरली मनोहर, राजनीतिज्ञों के लिए जननायक, योगियों के लिए पर-ब्रह्म और अन्याय के प्रति विद्रोह करने वालों के लिए आदर्शनायक था। आनन्दकन्द योगेश्वर कृष्ण को जन्म देकर ब्रजभूमि धन्य हो गई।'

दर्पण में मथुरा नगरी झलकने लगी। कंस के राज में धर्म-कर्म या भले कामों का तो कहीं पता नहीं चल रहा, हां, भोगविलासियों के नाच-तमाशे अवश्य ही चारों ओर दिखलाई पड़ रहे हैं। कंस का पक्ष लेने वाले पापियों के घर सोने-चांदी से भरे पड़े हैं और गरीबों को जीने के भी लाले पड़ रहे हैं। नगर के एक ओर एक जेलखाना भी बना है। श्रीकृष्ण के माता-पिता देवकी वसुदेव इसी जेलखाने में बन्द हैं। देवकी राजा कंस की बहन हैं फिर भी वह यह दुख भोग रही हैं। और वसुदेव तो विशेष राजनीतिक कारण से कंस के

द्वारा इस प्रकार सताये जा रहे थे।

मैंने पूछा—'वह राजनीतिक कारण क्या था जिसके लिए उन्हें इतना सताया गया ?'

इसका कारण यह था कि अंधक और वृष्णि दो यादव कबीले एक साथ जुड़ गए थे। उनकी पंचायत में अन्धकों और वृष्णियों का समान अधिकार था। अन्धक लोग सैनिक थे और वृष्णि व्यापारी। अन्धकों के मुखिया उग्रसेन पंचायत के अध्यक्ष थे और वृष्णियों के मुखिया वसुदेव प्रधान मंत्री थे। उग्रसेन के बेटे कंस का विवाह मगध के पौरववंशी राजा जरासंध की दो बेटियों से हुआ था।

जरासंध बड़ा ही शक्तिशाली, क्रूर और घमण्डी था। उसने अनेक छोटे-बड़े कबीलों की जनतांत्रिक प्रजा को अपना गुलाम बना लिया था। वह बहुत सारे गणतंत्रों को खत्म करके अपना एक बड़ा साम्राज्य बनाने का सपना देखा करता था। कृष्ण जब बच्चे थे तभी से जरासंध ने सैकड़ों राजाओं और उनके परिवारों को पकड़ रखा था। उस ज़माने में नरमेध यज्ञ समाज के द्वारा अस्वीकार किया जा चुका था, लेकिन जरासंध यह यज्ञ करके अपने कैदियों की बलि चढ़ाने पर उतारू था। ऐसे अत्याचारा श्वसुर की सलाह से कंस ने सेना को अपनी ओर मिलाकर अन्धक वृष्णि पंचायत के अध्यक्ष अर्थात् अपने पिता उग्रसेन तथा प्रधान मंत्री वसुदेव और दूसरे महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों को पकड़कर कैद खाने में डाल दिया था। यही नहीं, उसने वसुदेव के उन बच्चों को, जो कि जेलखाने में ही पैदा हुए थे, मरवा डाला, 'जिससे कि भविष्य में उनका कोई वंशज कंस के राज्य का दावेदार न बन सके।'

मैंने कहा—'इसका कारण तो शायद नारद जी की सलाह थी। कम से कम हमारे पुराणों में तो यही लिखा है।'

'हो सकता है कि किसी नारद ने कंस के पाप का घड़ा भरने के लिए ही उसे ऐसी सलाह दी हो, लेकिन कंस ने राजनैतिक कारणों से ही यह पाप

किया था।' कंस की यह योजना सफलीभूत न हो सकी। दुष्टों की पूरी निगरानी रहते हुए भी वसुदेव और देवकी का आठवां बेटा कृष्ण जेलखाने से निकाल कर गोपों के चौधरी नन्द के घर पहुंचा दिया गया। इस कथा को सभी जानते हैं।

कृष्ण गोपों के बीच में पले, उन्होंने कसरत, कुश्ती लड़ना-भिड़ना सभी कुछ गोपों के साथ ही सीखा। उस ज़माने में इन्द्र नाम का एक शक्तिशाली आर्य मुखिया मध्य एशिया में रहता था। वेद के एक मंत्र का अर्थ करके कुछ विद्वानों ने हमें यह बतलाया है कि पहले इन्द्र ने अपनी माता पर अत्याचार करने वाले अपने पिता को टांग पकड़कर उठा फेंका और उसका सिर तोड़ कर उसे यमलोक पहुंचा दिया था। उसने असुरों से बार-बार हारने वाले देवों का संगठन किया और उस संगठन के प्रताप से देव लोग असुरों को हर मोर्चे पर मात देने लगे। तब से इन्द्र का पद प्रतिष्ठित हो गया था। प्रजा से इन्द्र की पूजा देवता की तरह कराई जाती थी। इन्द्र की बढ़ती हुई शक्ति हिन्दुस्तान के अनार्य राजे-रजवाड़ों के लिए बड़ी दुखदाई बन गई थी। यादवों ने इन्द्र को मन से तो अपना नेता स्वीकार नहीं किया था पर गांवों में इन्द्र की पूजा का रिवाज चल पड़ा था। लोगों के मनों में यह धारणा जमा दी गई थी कि वर्षा इन्द्र की कृपा से ही होती है। इन्द्र चाहें तो पानी बरसे, न चाहें तो न बरसे। यदि वह नाराज़ हो जाएं तो इतना पानी बरसा सकते हैं कि सारे घर, गांव, गाय, बैल और मनुष्य डूब जाएं। बिजली के रूप में यदि वह अपना वज्र धरती पर गिरा दें तो धरती फट जाए। इस इन्द्रवादी प्रचार से ब्रजवासियों के मन धीरे-धीरे सहमने लगे थे। इसका एक कारण यह भी था कि ब्रज को वर्षा से अक्सर बड़ा नुकसान उठाना पड़ता था। तेज बरसात होने पर वहां की मिट्टी बड़ी तेज़ी से कटती थी। कामवन नाम का एक बड़ा घना जंगल पास होने से कभी-कभी तो ऐसी वर्षा होती थी कि ब्रज मण्डल में भयानक बाढ़ें आ जाती थीं। बेचारे ब्रजवासियों ने इस प्रकार के कष्ट झेलते-झेलते अन्त में इन्द्र

के आगे सिर झुकाने का निश्चय कर लिया। वे इन्द्र की सेवा में मनो मिठाई-पकवान, दूध, दही आदि अर्पित करते थे।

कृष्ण को यह सब अच्छा नहीं लगता था। उन्होंने अपने साथी-संगियों से कहा कि गांव वाले बेकार ही अपने आपको दुश्मनों के जाल में फंसा रहे हैं। पानी प्रकृति के नियमों से ही कम या अधिक बरसता है, इन्द्र का उससे कोई मतलब नहीं है। हमें इस तरह के अन्ध विश्वासों में नहीं पड़ना चाहिए। कृष्ण के साथी तो उनकी इस बात को मानते थे, लेकिन गांव के बड़े-बूढ़े इन बातों से बड़े नाराज़ होते थे। वे कहते, 'देवी-देवताओं के मामले में बच्चों को नहीं बोलना चाहिए।'

पर बालक कृष्ण का विद्रोही मन शत्रु के झूठे प्रचार के आगे अपना सिर झुकाने से इनकार करता था। एक बार बाढ़ में प्रजा का हाहाकार सुन कर कृष्ण ने अपने साथियों से कहा—'मित्रो, अगर कामवन की ओर एक पहाड़ होता तो फिर जमुना इधर से न बह पाती।'

मनसुखा बोला—'कैसी बातें करता है कान्हा, पहाड़ क्या मेरी तेरी इच्छा से किसी जगह बनते हैं, यह सब तो भगवान की माया है। वह हमें दुखी देखना चाहता है, इसीलिए उसने यहां पहाड़ नहीं बनाया। हर वर्ष यमुना नदी में बाढ़ आती है और हमारे सैकड़ों गाय-बैल बह जाते हैं। क्या करें, हमारा भाग्य ही खोटा है।'

कृष्ण बोले—'केवल उसी आदमी का भाग्य खोटा होता है जो निकम्मा होता है। हम बैठे-बैठे भाग्य को नहीं कोसेंगे, अगर भगवान ने यहां पहाड़ नहीं बनाया है तो हम बनाएंगे।'

मनसुखा, श्रीदामा आदि साथी-संगी कृष्ण का यह जोश देखकर हंसने लगे, बोले—'तुम अवश्य पागल हो गए हो कान्हा। भला कहीं आदमी भी पहाड़ बना सकता है?'

'क्यों नहीं बना सकता। आदमी को बुद्धि किसलिए मिली है? सामने

बरसाना में अरवली की पहाड़ी है। वहां से पत्थर की चट्टियां कटवाओ और इस ओर एक पहाड़ जैसी मोटी और ऊंची दीवार खड़ी कर दो। यमुना फिर जब भी बढ़ेगी तो उस पहाड़ जैसी दीवाल के कारण इधर नहीं आ पायेगी हमारा गो-वंश फिर निःशंक होकर बढ़ सकेगा।'

कुछ साथियों को कृष्ण की यह सूझ बड़े काम की लगी। कृष्ण की सूझ-बूझ से कई बार लड़के ऐसे-ऐसे कमाल के काम कर चुके थे। उनमें से बहुतों को कृष्ण की इस योजना पर विश्वास हो गया। कृष्ण ने कालिय नामक नाग जाति के एक ऐसे घमण्डी का सिर नीचा किया था जो यमुना के एक स्थल पर अपना ऐसा अधिकार जमा कर बैठ गया था कि गांव वाले उधर जा भी नहीं पाते थे। ऐसा लगता है कि कालिय नाग शायद कोई नावों पर डाके डालने वाला स्वार्थी और बलवान लुटेरा रहा होगा। लड़कों के खेल में गेंद के बहाने कृष्ण ने उसको ऐसी चालाकी से घेरा कि जिससे बड़े-बड़े बलशाली घबराते थे। उस कालिय नाग ने लड़कों के आगे चीं बोल दी। वक जाति के बहुत से कबीले उन दिनों उज़बेकिस्तान से लेकर मथुरा के आसपास तक फैले हुए थे। यह वक ही अब बेक कहलाते हैं। यह लोग पहले बड़े ज़ालिम थे। कृष्ण ने युक्तियों से ऐसे ही एक बकासुर को भी मौत के घाट उतार दिया था। अपनी गायों को बचाने के लिए कृष्ण के नेतृत्व में ब्रज के बाल-गोपालों ने बड़े-बड़े साहस-भरे काम कर दिखलाए थे। इसलिए उनकी इस सूझ को भी कुछ मित्रों ने सराहा।

कृष्ण बड़े ही लगन वाले आदमी थे। जब एक बात मन में ठान ली तब उसे पूरा किए बिना उन्हें चैन नहीं पड़ सकता था। कृष्ण के उद्यम से आखिरकार लगभग सात मील लम्बी और सौ फुट ऊंची एक पहाड़ जैसी मोटी दीवार खड़ी हो गई। कहावत प्रसिद्ध है कि सात-पांच की लाकड़ी, एक जने का बोझ। इस तरह कृष्ण ने सचमुच छंगुलिया पर पहाड़ उठा लिया।

जादू के दर्पण में उस पहाड़ का चित्र सामने आने लगा। गिरि गोवर्द्धन

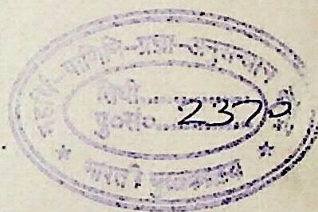
सचमुच पहाड़ जैसा नहीं लगता। पत्थर की चट्टियों दर चट्टियों को मिट्टी से जमाकर यह पहाड़ बनाया गया है। इसके अन्दर एक बहुत लम्बी गुफा भी है, जिसमें घनघोर वर्षा के समय गाय-बैल और गांव वालों को सुरक्षा दी जाती थी। कृष्ण ने यह आदेश भी दिया कि इस पहाड़ से पत्थर की एक किर्च भी तोड़ी न जाए। यह आदेश आज तक लागू है।

सात मीलों तक फैले हुए इस सौ फुट ऊंचे बांध को श्रीकृष्ण ने गिरि-गोवर्द्धन नाम दिया। यह सच है कि उसके बाद गोवर्द्धन के क्षेत्र में आज तक बाढ़ नहीं आई। ऐसे ही अनोखे लोकोपकारी काम करने के कारण श्रीकृष्ण भगवान माने जाते हैं।

• • •



मुद्रक :सविता प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली 28931



प्रेरणाप्रद, रोचक एवं सरल जीवन-चरित्र

मेरा बचपन	रवीन्द्रनाथ ठाकुर
ईश्वरचन्द्र विद्यासागर	रवीन्द्रनाथ ठाकुर
क्रान्तिकारी ऋषि कार्ल मार्क्स	लाला हरदयाल
हमारे राष्ट्र-निर्माता	सत्यकाम विद्यालंकार
महापुरुषों की झांकियां	आचार्य चतुरसेन
हमारे स्वामी	चमूपति, एम० ए०
महापुरुषों के संस्मरण	विश्वनाथ
गांधी जी से क्या सीखें	विश्वनाथ
सत्य का पुजारी	प्रकाश पण्डित
महापुरुषों का बचपन	प्राणनाथ वानप्रस्थी
आदर्श बालक	प्राणनाथ वानप्रस्थी
आदर्श देवियां	प्राणनाथ वानप्रस्थी
सच्ची देवियां	प्राणनाथ वानप्रस्थी
साहसी बालक	प्राणनाथ वानप्रस्थी
भारत के महान् ऋषि	प्राणनाथ वानप्रस्थी

राजपाल एण्ड सन्ज़